AISHE CODE - 14178-2019

महाविद्यालय के संस्थापक

Institutional Swacchhata Ranking-2019

All India Survey on Higher Education

Ministry of Human Resource Development, Govt. of India

महाविद्यालय के प्रबंधक

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा श्रेणी 'बी' प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर–२७३ ०१४ (उ.प्र.)

Web : www.mpm.edu.in | e-mail : mpmpg5@gmail.com | Phone : 9794299451

हमारे आदर्श

महाराणा प्रताप

स्वदेश, स्वधर्म, स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिये सर्वस्व निछावर करने वाले राष्ट्रनायक परमवीर महाराणा प्रताप का उज्ज्वल प्रदीप्त चरित्र हमारा आदर्श है। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान् श्रीराम के श्रीमुख से निःसृत-

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

और पुण्य प्रताप महाराणा प्रताप का यह उद्घोष कि-

'जो हठि राखे धर्म को तिहि राखै करतार'

हमारे सदा स्मरणीय बोधवाक्य हैं। शिक्षा परिषद् और महाविद्यालय को राष्ट्रनायक महाराणा प्रताप के नाम पर स्थापित करने के पीछे यही स्पष्ट उद्देश्य और प्रयोजन है कि इन संस्थाओं में अध्ययन-अध्यापन करने वाला युवा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं कला की कालोचित शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ अपने देश और समाज के प्रति सहज निष्ठा और अटूट श्रद्धा का पाठ भी पढ़े।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक

शिक्षा के प्रसार को लोक जागरण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का सशक्त माध्यम स्वीकार करते हुए युगपुरुष ब्रह्मलीन पूज्य महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश के केन्द्र एवं अपनी कर्मस्थली गोरखपुर में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की शिक्षण संस्थाओं को संचालित करने हेतु महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की १६३२ ई. में स्थापना कर शिक्षा क्षेत्र में अविस्मरणीय भूमिका की नींव रखी। वर्तमान में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत संचालित साढ़े तीन दर्जन से भी अधिक शिक्षण-संस्थाओं में ३५ हजार से भी अधिक छात्र-छात्रायें कला, विज्ञान, वाणिज्य, साहित्य, चिकित्सा और प्राविधिक विषयों में परम्परागत तथा आधुनिक विषयों की शिक्षा ले रहे हैं।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय के संस्थापक

अपने वरेण्य गुरुदेव युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के बहुआयामी सपनों को साकार करने में निरन्तर संलग्न सामाजिक समरसता के उद्‌गाता, राष्ट्रवादी राजनीति के पुरोधा और अप्रतिम धर्मयोद्धा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सन् १६३२ ई. में गुरुदेव द्वारा स्थापित 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद' को अपनी निष्ठा, सुदीर्घकालीन तपस्या और अनुभव की पूँजी से उत्तरोत्तर समृद्ध, समुन्नत और प्रगतिशील रखते हुए १६५७-५८ ई. में गोरखपुर में वर्तमान विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये उदारतापूर्वक विलीनीकृत तत्कालीन महाराणा प्रताप महाविद्यालय को नये रंग रूप में पुनर्जीवित करते हुये उच्च शिक्षा से वंचित ग्रामीण अंचल जंगल धूसड़ में महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना की, जिसने शैक्षणिक गुणवत्ता, संस्कारयुक्त एवं अनुशासित परिसर की स्थापना कर अपनी बेहतरीन साख बनायी है।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्रबन्धक

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के मंत्री एवं महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के प्रबन्धक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज की स्पष्ट दृष्टि है कि - महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना के दर्शन एवं लक्ष्य के अनुसार इस संस्था से अध्ययन करने वाला युवा अत्याधुनिक ज्ञान-विज्ञान तथा कला की कालोचित शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ राष्ट्र एवं समाज के प्रति सहज निष्ठा और श्रद्धा का पाठ पढ़े। भारतीय जीवन दर्शन का वह अनुगामी बनें। उनका कहना है कि प्रगति और परम्परा राष्ट्रीय-सामाजिक विकास रथ के दो पहिये हैं, ऐसे में अत्याधुनिक संसाधनों, सूचना एवं संचार माध्यमों के उपयोग के साथ अध्यापन तथा भारतीय जीवन दर्शन के प्रति श्रद्धा भाव पैदा करना इस महाविद्यालय का मिशन है।

महाविद्यालय के बारे में

पूर्वी उत्तर प्रदेश में गुणवत्तायुक्त, युगानुकूल और भारतीय संस्कृति केन्द्रित शिक्षा के प्रसार हेतु युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने 1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना की। ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अन्तर्गत 2005 ईस्वी में महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना की गई। यह महाविद्यालय गोरखपुर महानगर (उत्तर प्रदेश) के पूर्वी-उत्तरी छोर पर ग्राम-सभा जंगल धूसड़ के ग्रामीण परिवेश में स्थिति महानगरीय कोलाहल से दूर किन्तु महानगरीय सुविधाओं से सम्पन्न है। अपने स्थापना-काल से ही नित-नूतन प्रयोगों के कारण इस महाविद्यालय ने पूर्वी उत्तर-प्रदेश में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। स्वच्छता, प्रार्थना सभा (राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, सरस्वती वन्दना, ईश वन्दना के साथ श्रीमद्भगवतगीता के तीन श्लोक अथवा महापुरुषों की

की जयन्ती/पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि), पाठ्यक्रम योजना के अनुसार कक्षाध्यापन, कक्षाध्यापन में अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग, सप्ताह में एक दिन विद्यार्थियों द्वारा कक्षाध्यापन, साप्ताहिक स्वैच्छिक श्रमदान, मासिक मूल्यांकन, प्रगति आख्या (प्रत्येक विद्यार्थी की उपस्थिति, साप्ताहिक कक्षाध्यापन, मासिक मूल्यांकन, विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा परिणाम, परीक्षा परिणाम का विवरण), प्रत्येक विभाग द्वारा गाँव को गोद लेने, प्रत्येक शिक्षक द्वारा पाँच विद्यार्थियों को गोद लेने, प्रतिमाह शिक्षक द्वारा स्वमूल्यांकन, वर्ष में दो बार विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के बारे में अभिमत देने, अद्वितीय छात्रसंघ, महाविद्यालय प्रशासन में छात्र-सहभाग, विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा, प्रति सत्र समावर्तन संस्कार समारोह, शोध संस्कृति का विकास, स्व अनुशासन, आन लाइन पुस्तकालय, अत्याधुनिक तकनीकों से युक्त प्रयोगशाला, अद्यतन वेबसाइट, पेड़-पौधों से आच्छादित हरा-भरा परिसर जैसे अनेक मौलिक प्रयोग एवं विशिष्टताएँ महाविद्यालय की पहचान है।

स्वच्छता-

महाविद्यालय विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती का पावन मन्दिर है। गुरूजनों की तपस्थली एवं मनुष्य निर्माण की यज्ञशाला है। अत: पवित्रता एवं स्वच्छता के साथ प्रकृति पूजा को अपने स्थापना काल से ही महत्व देने वाले महाराणा प्रताप महाविद्यालय ने प्रारम्भ से ही अपने परिसर में स्वच्छता, नकलविहीन परीक्षा और तब पढ़ाई को वरीयता प्रदान की। महाविद्यालय की स्पष्ट मान्यता है कि स्वच्छ कक्षा, भवन, परिसर में ही गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई हो सकती है। नकल विहीन परीक्षा भी गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई को सुनिश्चित करती है।

अत: महाविद्यालय ने अपने स्थापना काल (2005 ई.) से ही स्वच्छता को अपना मिशन बना रखा है। इस स्वच्छता मिशन में कर्मचारी, शिक्षक, प्राचार्य, विद्यार्थी सभी सम्मिलित हैं।

हिन्दुस्ता
गोरखपुर • रविवार •

घंटी बजते ही झाड़ू उठा लेते है

गोरखपुर | प्रमुख संवाददाता

मध्याह्न 12:10 बजे। टनटनटन.... टनटनटन...। महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर कॉलेज जंगल धूसड़ में तीसरा पीरियड खत्म होने पर बजने वाली यह घंटी रोज इंटरवल की सूचना देती है, लेकिन शनिवार को शिक्षक और छात्र-छात्राओं ने झाड़ू, पाइप, बाल्टी, फावड़ा और टोकरी उठा ली। किसी को बात करने की फुर्सत नहीं। हर कोई पहले से जानता है कि उसे क्या करना है। कुछ ही पल में कोई खिड़की साफ करने में तो फर्श, सीढ़ी, ट्वायलेट या बगीचे में उग आई झाड़ियों की सफाई में जुट गया है।

नोटिस बोर्ड पर लगी समय सारिणी पर नजर गई तब पता चला कि शनिवार को यहां इंटरवल नहीं होता। यह समय साफ-सफाई का है। स्वैच्छिक श्रमदान के इस एक घंटे में कालेज का कोना-कोना चमका दिया जाता है।

वर्ष 2005 में स्थापना के पहले साल से ही कॉलेज में शनिवार का यह अभियान चलता है। प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव बताते हैं, 'विद्यार्थी जीवन में डेस्क

एमपीपीजी कॉलेज जंगल

- हर शनिवार को कॉलेज में दिखत नज़ारा
- दो अक्तूबर को पीएम मोदी करने स्वच्छ भारत अभियान का शुभार

एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में शनिवा नही होता, इसी समय में छात्र और शिक्ष परिसर की सफाई करते है

पर जमा धूल हर सुबह मुझे परेशान करती थी। महसूस किया कि यह काम

संकल्प से सिद्धि तक

महाविद्यालय के स्थापना काल (2005 ई. में) से साप्ताहिक स्वैच्छिक श्रमदान के साथ ही स्वच्छता का अभियान प्रारम्भ हो गया। परिसर में प्लास्टिक का प्रयोग प्रतिबन्धित, पेड़-पौधों के प्रति प्रेम, डेस्क-बेंच पर कुछ भी न लिखने, कक्षा एवं परिसर में किसी प्रकार की गन्दगी न करने, कागज इत्यादि के टुकड़े न फेकने, गिरा हुआ कागज उठा लेने जैसे विविध आग्रहों को प्रार्थना सभा में, छात्रसंघ की साधारण सभा में, बैठकों, कार्यक्रमों में बार-बार दुहराए जाने से स्वच्छता हमारे परिसर की संस्कृति का हिस्सा बन गया एवं हमारे परिसर का स्वभाव बन चुका है। परिणामतः स्वच्छता महाविद्यालय परिसर के प्राचार्य कर्मचारियों-शिक्षकों-विद्यार्थियों के स्वभाव में शामिल है। हमने स्वच्छता के सन्दर्भ में संकल्प से सिद्धि प्राप्त की है।

न

8 सितम्बर 2014

प्राचार्य, शिक्षक और विद्यार्थी

न धूसड़

ा है यह

वाले हैं

र को इंटरवल

ह कॉलेज

माहौल ऐसा है कि छात्रों-शिक्षकों के बीच स्वैच्छिक श्रमदान की सूची में अपना नाम दर्ज कराने की होड़ मची रहती है। शुक्रवार दोपहर को ही नोटिस बोर्ड पर अलग-अलग टोलियों की सूची लग जाती है। हर टोली में दो शिक्षक-10 छात्र। लेकिन कोई किसी का नेतृत्व नहीं करता। न किसी से कुछ कहना होता है। युद्ध छिड़ने पर जैसे सायरन बजते ही सैनिक सीमा पर जाने के लिए तैनात हो जाते हैं शनिवार को 12:10 की घंटी बजने के बाद यहां यही नजारा देखने को मिलता है।

अकेले चपरासियों के बस का नहीं। जो विद्यार्थी, शिक्षक या प्राचार्य विद्यालय को खुद साफ करता है, उसके रहते कोई परिसर को गंदा नहीं कर सकता।'

स्वच्छता के विविध आयाम

प्रसाधन स्वच्छता एवं विद्यार्थी शौचालय अनुपात

विविधीकृत समूह एवं एकल शौचालय महाविद्यालय के प्रांगण, प्रशासनिक भवन, शैक्षिक भवन तथा छात्र एवं छात्रा छात्रावास में है।

कुल शौचालयों की संख्या 101 है :-

- प्रशासनिक भवन - 02
- शैक्षिक भवन - 12
- परिसर - 31
- शिक्षक आवास - 06
- छात्रावास - 50

प्रसाधन महाविद्यालय के प्रांगण व छात्रावासों में पर्याप्त मात्रा में स्थान-स्थान पर हैं।

छात्रावास में छात्र एवं शौचालय का अनुपात कहीं 4:1 तो कहीं 8:1 है। प्रति शौचालय भारांक 4 से 8 है।

स्वच्छता के लिए समर्पित महाविद्यालय के सभी शौचालय साफ सुथरे एवं आधुनिक हैं। सफाई पर पूरा ध्यान दिया जाता है एवं इसके लिए सामान्य एवं नवाचार युक्त कार्य प्रणाली स्थापना काल से ही विकसित की गई है। यथा-चरणों में एवं आरोही अवरोही एवं तीर्यक व्यवस्था द्वारा साफ सुथरा शौचालय सुनिश्चित किया जाता है :-

क) शौचालय की प्रतिदिन दो बार सफाई के लिए प्रत्येक चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी में शौचालय आवंटित हैं। वे सफाई एवं शौचालय के रखरखाव के लिए उत्तरदायी होते हैं।

ख) महाविद्यालय एवं छात्रावासों में स्वच्छता समिति गठित है। जिसके प्रभारी शिक्षक एवं सदस्य कर्मचारी व चयनित विद्यार्थी होते हैं। ये आपस में बैठकर स्वच्छता सम्बन्धी योजनाएं बनाते हैं तथा समस्याओं का निराकरण एवं देखरेख करते हैं।

ग) महाविद्यालय के स्थापना काल से ही प्रत्येक शनिवार को मध्यावकाश के पश्चात् की चार कक्षाएं दस मिनट कम

परिसर में स्वच्छता हेतु चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की दिनचर्या

स्थान	तल	नाम	कार्य विवरण	
			प्रातः (08:30–11:00) / सायं (03:00–04:30)	11:00–03:00 बजे तक
मुख्य भवन	भूतल	श्री विश्वनाथ	अपने तल की समस्त सफाई, भूतल से प्रथम तल तक की सीढ़ी, छात्र एवं नियंता प्रसाधन।	घण्टी लगाना, प्राचार्य कार्यालय से सम्बन्ध, जनेटर एवं मोटर चलाना।
	प्रथम	श्री रामलगन	अपने तल की समस्त सफाई, प्रथम तल से द्वितीय तल की सीढ़ी एवं शिक्षक कक्ष प्रसाधन।	मुख्य भवन के सामने वाले लॉन की सफाई।
	द्वितीय	श्री रामआशीष	अपने तल की समस्त सफाई, द्वितीय तल की सीढ़ी, सीढ़ी का प्रसाधन।	दक्षिणी लॉन की सफाई।
उत्तरी भवन	भूतल	श्री राजाराम	अपने तल की समस्त सफाई, भूतल से प्रथम तल की सीढ़ी की सफाई।	क्रीड़ा वाले लॉन की सफाई एवं साईकिल स्टैण्ड का प्रसाधन।
	प्रथम	श्री धमेन्दर गुप्ता	अपने तल की समस्त सफाई, प्रथम तल से दूसरे तल की सीढ़ी की सफाई एवं अतिथि प्रसाधन।	उत्तरी लॉन की सफाई एवं साईकिल स्टैण्ड वाले लॉन की सफाई।
	द्वितीय	श्री योगेन्दर	अपने तल की समस्त सफाई एवं पुस्तकालय से सम्बद्व।	वनस्पति उद्यान की देख–रेख, बैण्डमिटन एवं बालीबॉल वाले लान की सफाई, दोपहर की चाय, डीजल लाना, जनरेटर कक्ष की सफाई एवं मुख्य गेट की सफाई।
छात्रावास	—	श्री विनोद	छात्रावास परिसर एवं सफाई।	

डॉ. अभिषेक सिंह
सह प्रभारी, स्वच्छता विभाग

विनय कुमार सिंह
प्रभारी, स्वच्छता विभाग

कर दी जाती हैं एवं मध्यावकाश स्थगित कर दिया जाता है। इस तरह 12:10 से 1:10 बजे तक सभी विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी एवं प्राचार्य स्वैच्छिक श्रमदान करते हैं एवं महाविद्यालय के शौचालय के साथ पूरा प्रांगण स्वच्छ हो जाता है।

घ) इसी प्रकार छात्रावासों में भी साप्ताहिक स्वैच्छिक श्रमदान योजना लागू है। प्रतिवर्ष महाविद्यालय एवं छात्रावास में अनुशासन समिति गठित होती है, जिसमें शिक्षक के अलावे विद्यार्थियों की भी सहभागिता होती है। अपने आवंटित घण्टी में अनुशासन समिति के सदस्य पूरे महाविद्यालय की देखरेख करते हैं। जहाँ भी वे कागज का टुकड़ा अथवा कुछ भी पाते हैं उठाकर कूड़ेदान में डाल देते हैं। स्वच्छता में किसी भी प्रकार की कमी हो तो वे सम्बन्धित कर्मचारियों को निर्देशित करते हैं।

ङ) इसके अतिरिक्त महाविद्यालय एवं छत्रावास के सभी सदस्यों से प्रार्थना सभा, छात्रसंघ की साधारण सभा, अन्य सामूहिक कार्यक्रमों में बार-बार आग्रह किया

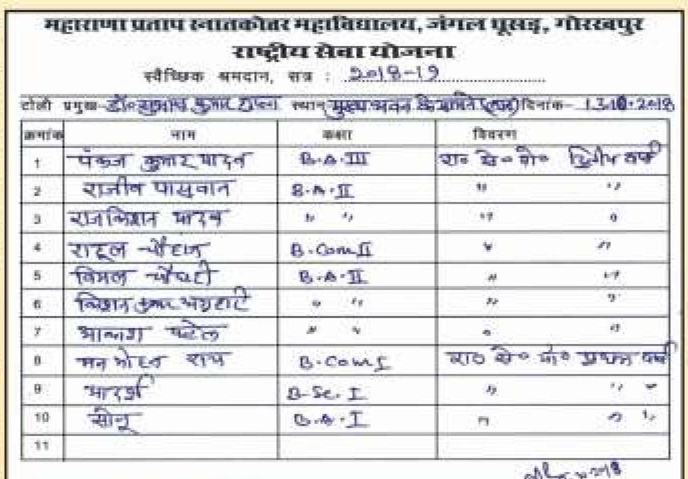
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
राष्ट्रीय सेवा योजना
स्वैच्छिक श्रमदान, सत्र : 2018-19
टोली प्रमुख- डॉ० सुभाष कुमार शुक्ल स्थान- मुख्य भवन द्वितीय तल दिनांक- 13.10.2018

क्रमांक	नाम	कक्षा	विवरण
1	पंकज कुमार यादव	B.A. III	रा० से० यो० द्वितीय वर्ष
2	राजीव पासवान	B.A. II	" "
3	राजकिशन यादव	" "	" "
4	राहुल चौहान	B.Com. II	" "
5	विमल चौरसी	B.A. II	" "
6	किशन कुमार भट्टाटे	" "	" "
7	भावना पटेल	" "	" "
8	मन मोहन राय	B.Com. I	रा० से० यो० प्रथम वर्ष
9	भारती	B.Sc. I	" "
10	सीनू	B.A. I	" "
11			

जाता है कि स्वच्छता, विद्युत अपव्यय, जल आपूर्ति इत्यादि में कहीं कोई अनियमितता दिखे तो प्राचार्य को बताएं अथवा प्राचार्य के न रहने पर प्राचार्य कक्ष के सामने सुझाव पेटिका में लिखकर अवश्य डाल दें। प्रतिदिन प्राचार्य द्वारा पत्र पेटिका खोला जाता है एवं समस्याओं-अनियमितताओं का त्वरित निराकरण किया जाता है।

शौचालय गुणवत्तायुक्त हैं। सामान्यतः शौचालय देशी एवं पाश्चात्य प्रकार दोनो ही हैं। महिला एवं पुरुष के लिए अलग-अलग प्रकार का यूरीनल है। सभी शौचालय जैव-निम्नीकरणीय (बायोडिग्रेडिबल) टैंक से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक शौचालय में नल एवं सिस्टर्न लगा हुआ है। शौचालय सफाई हेतु हार्पिक, अम्ल, ब्रश, वायु सुगंधक (एअर फ्रेशनर), तौलिया, मेडिकेटेड साबुन इत्यादि की आवश्कतानुसार व्यवस्था रहती है। सभी शौचालयों में शुद्ध वायु के आवगमन हेतु वेन्टीलेटर की व्यवस्था है। दुषित वायु बाहर निकालने हेतु भी पंखे लगाए गए हैं। दिव्यांग व्यक्तियों हेतु दो कुर्सी कमोड भी है। सभी यूरीनल में फिनायल की गोली डाली जाती हैं एवं नल की भी व्यवस्था है।

एलओसी : 72 साल से विवाद, मुद्दा फिर गरमाया पेज 09 | अमेरिका में गोलीबारी, पांच लोगों की मौत पेज 15

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
सोमवार, 02 सितम्बर 2019, गोरखपुर, पांच प्रदेश, 21 संस्करण, नगर संस्करण
www.livehindustan.com

नसीहत: मुख्यमंत्री योगी ने मेधावी बच्चों का किया सम्मान, कहा-अच्छे संस्कार दें

शिक्षक और बच्चे खुद स्कूल साफ करें तो हर्ज क्या: योगी

लखनऊ | विशेष संवाददाता

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि यदि बच्चे व शिक्षक मिलकर स्कूल की सफाई करें तो क्या हर्ज है। बच्चे स्कूल की सफाई क्यों नहीं कर सकते। यह सराहनीय होगा। उन्हें बचपन से ही काम करने का संस्कार मिलेगा। मुख्यमंत्री रविवार को मेधावी विद्यार्थी सम्मान-2019 समारोह में बोल रहे थे।

लखनऊ के डॉ. राम मनोहर लोहिया विधि विवि में हुए समारोह में यूपी बोर्ड, संस्कृत शिक्षा परिषद, सीबीएसई और सीआईएससीई बोर्ड के 10 वीं व 12 वीं के 1695 मेधावियों को सम्मानित किया गया। इसमें राज्य स्तरीय 102 टॉप 10 मेधावियों को मुख्यमंत्री ने खुद सम्मानित किया। मेधावियों के माता-पिता को पगड़ी व पटुका पहना कर सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब लोग बच्चों के स्कूल में सफाई करने पर चौंकते हैं तो मुझे दुख होता है। हम जब स्कूल में थे तो साफ-सफाई करते थे। यदि स्कूलों में भी शिक्षक-विद्यार्थी मिल कर सफाई करें तो बेहतर होगा।

उन्होंने गोरखपुर के महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज का उदाहरण देते हुए कहा कि जब यह बना तो प्रधानाध्यापक ने कहा कि सफाई कर्मचारी हटा कर कहीं और लगा दें। हमने जब पूछा कि क्यों? तो उन्होंने कहा कि कॉलेज की सफाई हम सब खुद करेंगे। 11 साल हो गए हैं और वहां के शिक्षक व विद्यार्थी मिल कर सफाई व बागवानी करते हैं।

रविवार को लखनऊ के डॉ. राम मनोहर लोहिया विधि विवि में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री योगी से पुरस्कार लेने के बाद मेधावी बच्चों ने उनका आशीर्वाद लिया।

कुपोषण मिटाने को मदद पेज 08

102 टॉप टेन मेधावियों को खुद सीएम ने दिया सम्मान

1695 कुल मेधावी सम्मानित किए गए

मेधावियों को एक लाख रुपये व टैबलेट बांटे

दसवीं व बारहवीं की राज्यस्तरीय मेरिट सूची में शामिल 102 मेधावियों को एक-एक लाख रुपये, टैबलेट और प्रशस्ति पत्र दिया गया। जिला स्तर पर टॉप टेन की सूची में शामिल 1593 मेधावियों को 21 हजार रुपये व टैबलेट देकर सम्मानित किया गया। जिला स्तर पर केवल यूपी बोर्ड के मेधावियों को सम्मान दिया गया है।

यूपी की छवि बदली पेज 08

योगी जी ने कहा– महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसंड़, गोरखपुर स्वच्छता का मॉडल है, जहां सफाई प्राचार्य, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी सभी करते है।

जल प्रबन्धन

महाविद्यालय में जल की पर्याप्त व्यवस्था है। महाविद्यालय में दो सबमर्सिबल पम्प लगे है जिनसे आवश्यक भूगर्भीय जल प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार से प्राप्त जल को बड़े-बड़े टैंकों में एकत्रित किया जाता है। पाइप एवं नल द्वारा यह जल वितरित होता है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में छः इंडिया मार्का हैण्ड पम्प हैं जिनमें दो दोनों गेट पर, एक वानस्पतिक लॉन में, एक रसायन प्रयोगशाला के पीछे, एक-एक साइकिल स्टैण्ड एवं उत्तरी खेल के मैदान में। महाविद्यालय एवं छात्रावास में आवश्यकतानुसार वाटर प्यूरिफायर एवं वाटर कूलर लगे हैं। टैंक जल में समय-समय पर ब्लीचिंग चूर्ण तथा सूक्ष्मजीवी नाशक का उपयोग किया जाता है। टैंक की सफाई भी समय-समय पर की जाती है। टैंक की क्षमता 15000 लीटर जल की है।

कूड़ा-कचरा प्रबन्धन

महाविद्यालय परिसर हरा भरा सुन्दर बनाए रखने के लिए ग्रीन आडिट तथा कुड़े-कचरे के प्रतिदिन निस्तारण हेतु ग्रीन आडिट कमेटी एवं बागवानी समिति कार्य करती है। स्वच्छता समिति कूड़ा निस्तारण पर नजर रखती है। महाविद्यालय में बेहतरीन व्यावहारिक एवं स्वदेशी कूड़ा निस्तारण प्रणाली है।

महाविद्यालय के विभिन्न स्थान पर कूड़ेदान रखे हुए है। प्रतिदिन कूड़े का निस्तारण शाम तक हो जाता है। जिससे अगले दिन प्रातः कूड़ेदान खाली हो जाता है।

प्रत्येक स्थान पर दो कूड़ेदान होते हैं एक वह जिसमें सड़ने गलने वाला कूड़ा एकत्रित होता है व दूसरा वह जिसमें जैव-निम्नीकरण न होने वाले कूड़े रहते है यथा प्लास्टिक एवं सिन्थेटिक पदार्थ। महाविद्यालय प्रांगण के अन्दर जैव-निम्नीकरण होने वाले व जैव-निम्नीकरण न होने वाले कूड़े को अलग-अलग गड्डों में डाला जाता है। कालेज के बाहर भी इसी प्रकार दो अलग-अलग प्रकार के कूड़े के लिए अलग-अलग गड्डा बना हुआ है। रसायन प्रयोगशाला के तरल (द्रव) अपशिष्ट को एक अलग टैंक में एकत्रित कर वाष्पोत्सर्जित किया जाता है। न सूखने पर एबजार्बेन्ट का इस्तेमाल भी किया जाता है। समय-समय पर जैव-निम्नीकरण न होने वाले गड्ढे में एकत्रित कूड़े को नगर निगम के माध्यम से निस्तारित कर दिया जाता है।

घास फूस, खर पतवार, कागज जैसे जैवनिम्नीकृत होने वाले कूड़े को खाद बनने दिया जाता है एवं समय-समय पर उसे कम्पोस्ट खाद के रूप में बागवानी में प्रयोग कर लिया जाता है।

कम्प्यूटर एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के कूड़े-कचरे सावधानी से अलग रखे जाते हैं और उसका प्रबन्धन ''अतेरो रिसाइकिलिंग प्राइवेट लिमिटेड'' को इस आशय के साथ करने को कहा जाता है कि उनके विषाक्त एवं हानिकारक प्रभावों से पर्यावरण को हानि न पहुँचे।

हरा-भरा परिसर

महाविद्यालय परिसर को हरा-भरा व सुन्दर बनाये रखने के लिए महाविद्यालय द्वारा ग्रीन आडिट समिति बनाई गई है। बागवानी समिति निरन्तर सक्रिय रहती है। बागवानी समिति प्रतिदिन सम्पूर्ण परिसर का स्वाभाविक क्रम में निरीक्षण करती रहती है। अलग-अलग परिसर के निरीक्षण के लिए चक्रानुक्रम में कार्य विभाजन तय किया जाता है। ग्रीन आडिट समिति अपनी बैठकों के रपट से बागवानी समिति को अवगत कराती रहती है।

परिसर में अनेक प्रकार के शाकीय, झाड़ी एवं वृक्षों के पौधे लगाये गये हैं। महाविद्यालय प्रागंण के 80% से अधिक क्षेत्र वनस्पतियों से भरा है। छात्रावास में भी पर्याप्त हरियाली है। छोटे में महाविद्यालय परिसर हरे-भरे पेड़-पौधों से ढका हुआ एवं स्वच्छ है।

प्रांगण के बाग, लॉन एवं वृक्ष का पूरा ध्यान दिया जाता है। वनस्पति विभाग स्वैच्छिक श्रमदान एवं प्रायोगिक कक्षाओं के अन्तर्गत आवश्यकतानुसार छात्र सहभागिता द्वारा पेड़-पौधों की देख-भाल करता है।

महाविद्यालय, राष्ट्रीय सेवा योजना एवं वनस्पति विभाग एवं छात्रावास में बागवानी के विभिन्न उपकरण उपलब्ध है।

परिसर : सामान्य स्वच्छता

लॉन में घास काटने की विद्युतचालित एवं मेकेनिकल दोनों प्रकार के मशीन हैं। अनेक खुरपी, कुदाल, तलवार, कैंची इत्यादि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इस प्रकार विभिन्न समितियों, राष्ट्रीयसेवा योजना एवं छात्र प्रतिभाग द्वारा महाविद्यालय का पूरा परिसर एवं छात्रावास हमेशा स्वच्छ रहता है। प्रत्येक शनिवार को स्वैच्छिक श्रमदान का कार्यक्रम स्वच्छता में महती योगदान करता है।

छात्रावास : स्वच्छता प्रबन्धन

छात्रावास में स्वच्छता हमारी कार्य संस्कृति का हिस्सा है। छात्रावासियों की स्वच्छता समिति प्रतिदिन स्वच्छता सुनिश्चित करती है। प्रतिदिन तीन बार सफाई होती है। रसोई एवं शौचालय की सफाई कर्मचारियों द्वारा की जाती है। फर्श पर कीटनाशक रसायन यथा फिनायल द्वारा पोछा लगता है। छात्रावास के शौचालय में सभी बुनियादी एवं सफाई के समान उपलब्ध रहते हैं।

छात्रावास में रसोई के सफाई एवं स्वच्छता पर विशेष दृष्टि रहती हैं। रसोइयों का कार्य करते समय स्वच्छ यूनीफार्म पहनना अनिवार्य होता है। कार्य करते समय श्वास या बात करने से भोजन संक्रमीत न हो सके इसके लिए उन्हे मास्क को पहनकर कार्य करने को कहा जाता है। उनके हाथ साफ करने के लिये तौलिया व मेडीकेटेड साबुन रखा

जाता रहता है। प्रयोग में आने वाले थाली ग्लास एवं जल सुविधा व गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्राचार्य/वार्डेन द्वारा औचक निरीक्षण समय-समय पर किया जाता है।

भोजन बनाने के कार्य हेतु छात्रावास रसोई में गैस सिलीन्डर का उपयोग होता है। भोजन हाल एवं रसोई में वेन्टीलेशन की प्रचुर व्यवस्था है। सभी स्थान पंखायुक्त है। बिजली कटने पर इन्वर्टर की व्यवस्था है। रसोई में एक्जास्ट पंखे भी हैं।

गाँव में महाविद्यालय

हमारे संस्थागत सामाजिक कार्य का केन्द्र स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं शिक्षा है। गाँव में महाविद्यालय की उपस्थिति प्रभावी एवं परिणाकारी है। 15 किमी. के दायरे में 28 गाँवों को 21 विभागों व रा.से.यो. ने सामाजिक कार्य हेतु गोद लिया है। इसका मुख्य ध्यान ग्रामीणों के सफाई, स्वच्छ जल पीने, स्वास्थ्य, सुरक्षा व पर्यावरण के प्रति जन-जागरण है। प्रत्येक सत्र में सभी विभाग चार एक दिवसीय शिविर का आयोजन अपने द्वारा गोद लिए गाँव में, विद्यार्थियों के साथ करते हैं। जागरुकता अभियान, विद्यार्थियों द्वारा सफाई करके उदाहरण प्रस्तुत करने, गाँवों में एक दिवसीय शिविर के दौरान स्वास्थ्य परीक्षण के लिए गुरू श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के डॉक्टर एवं निःशुल्क दवा ग्रामीणों को उपलब्ध करवाना हमारे समाज सेवा का अभिन्न अंग है। प्रत्येक शैक्षिक सत्र में 1000 से अधिक ग्रामीण लाभार्थी बनते हैं। ग्रामीणों की प्रतिक्रिया सकारात्मक होती है। सहभागी विद्यार्थियों से प्रतिक्रिया प्राप्त कर रिकार्ड सुरक्षित रखा जाता है। 80% से अधिक लोग खुल में शौच नहीं करते हैं, विगत 8 वर्षों से इस कार्य में संलग्न महाविद्यालय 80% से अधिक लोगों को बंद दरवाजे के पीछे शौच के लिए प्रेरित कर पाया है। अगले दो वर्ष में महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गाँवों को खुले में शौच से पूर्ण मुक्ति का लक्ष्य है।

महाविद्यालय संस्थागत सामाजिक दायित्व निर्वहन के अन्तर्गत स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं शिक्षा हेतु 28 गाँवों को 21 विभिन्न विभागों के अनुरोध पर उन्हें गोद लेने का अवसर प्रदान किया है, जहाँ विगत 8 वर्षों से कार्य हो रहा है, गोद दिए गए गाँव निम्नवत है :-

	विभाग	प्रभारी शिक्षक	गोद लिए गाँव का नाम
1.	हिन्दी	डॉ. आरती सिंह	छोरी रेतवहिया, बड़ी रेतवहिया
2.	प्राचीन इतिहास	श्री सुबोध कुमार मिश्र	हैदरगंज
3.	भूगोल	डॉ. विजय कुमार चौधरी	जंगल औराही, दहला हरसेवकपुर
4.	अंग्रेजी	श्रीमती कविता मन्ध्यान	शाहपुर
5.	अर्थशास्त्र	श्री मंजेश्वर	महुआ चाफी
6.	समाजशास्त्र	श्री बृजभूषण लाल	जंगल तिनकोनिया नं. 1
7.	राजनीतिशास्त्र	डॉ. अविनाश प्रताप सिंह	बसंतपुर, खुटवा
8.	मध्यकालीन इतिहास	डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह	ककरहिया
9.	रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन	श्री अभिषेक सिंह	मीरगंज, लालगंज
10.	मनोविज्ञान	डॉ. प्रज्ञेश कुमार मिश्र	छोटी जमुनहिया
11.	कम्प्यूटर साइंस	श्री विरेन्द्र तिवारी	बड़ी जमुनहिया
12.	गणित	श्री श्रीकान्त मणि त्रिपाठी	धोघड़ा
13.	प्राणिविज्ञान	डॉ. आर.एन. सिंह	लक्ष्मीपुर
14.	रसायनशास्त्र	डॉ. शिव कुमार बर्नवाल	रामपुर
15.	भौतिकी	सुश्री मनीता सिंह	भगवानपुर, हरिपुर
16.	वनस्पति विज्ञान	डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव	शेखवानिया
17.	सांख्यिकी	डॉ. अरुण राव	केवटहिया
18.	इलेक्ट्रॉनिक्स	श्री अभिषेक वर्मा	धूसिया
19.	वाणिज्य	डॉ. राजेश शुक्ला	तिनकोनिया
20.	बी.एड्. विभाग	श्रीमती शिप्रा सिंह	हसनगंज
21.	राष्ट्रीय सेवा योजना	डॉ. अभिषेक सिंह, सुश्री किरन सिंह	मंझरिया, हसनगंज

सभी विभागों के पास अपने-अपने गाँव की वास्तविक स्थिति का विवरण उपलब्ध रहता है।

गाँव में महाविद्यालय

गाँव में महाविद्यालय

दैनिक जागरण 7 गोरखपुर जागरण

शिक्षा और साक्षरता विकास की बुनियाद

सबका विकास और सुशासन केंद्र सरकार की प्राथमिकता: योगी

हिन्दुस्तान 6 दिसंबर

छात्र-छात्राओं की मेहनत सफल, साक्षर हुआ डांगीपार

प्रांसद योगी आदित्यनाथ ने कहा, अब कोई धोखे से नहीं लगवा पाएगा अंगूठा

जंगल औराही में सभी बने साक्षर

सांसद आदर्श ग्राम

हिन्दुस्तान • गोरखपुर • सोमवार • 06 जुलाई 2015 •

रविवार को सांसद आदर्श ग्राम जंगल औराही के प्रधानी टोला स्थित प्राथमिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में महिलाओं ने स्लेट पर नाम लिखकर साक्षर होने का प्रमाण दिया। • हिन्दुस्तान

डीडीओ ने दी गांव में होने वाले कार्यों की जानकारी

ग्राम पंचायत : जंगल औराही		ये काम हुए	
कुल टोले	14	सीसी रोड	3 किमी
कुल आबादी	5312	पक्की नालियां	3 किमी
निरक्षरों की संख्या थी	407	शौचालय	हर घर में
साक्षरता केंद्र	34	इंदिरा आवास	250 परिवारों को
साक्षरता अभियान	52 सप्ताह	पावर लाइन	वर्ष 2016 तक

जंगल औराही गांव में सहर सांसद योगी आदित्यनाथ ने प्रमाणपत्र बांटे।

अमर उजाला गोरखपुर मंगलवार, 6 दिसंबर 2016

साक्षरता विकास की रीढ़ : महंत

खंड शिक्षा अधिकारी ने डांगीपार गांव साक्षर घोषित किया

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर।

महंत आदित्यनाथ ने कहा कि साक्षरता विकास की रीढ़ है। यह विकास को गति और दिशा देती है। साक्षरता और विकास एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक नागरिक का शिक्षित होना राष्ट्र व समाज के लिए गौरव की बात है।

वे डांगीपार के प्राथमिक विद्यालय में संपूर्ण साक्षरता अभियान के समापन अवसर पर आयोजित समारोह में विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस गांव को साक्षर बनाने में महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज के प्रशिक्षु बधाई के पात्र हैं। इस कार्य के लिए विद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव, डॉ. शैलेंद्र प्रताप सिंह सहित साक्षरता अभियान के संयोजक भिखारी प्रजापति को भी धन्यवाद दिया। प्रत्येक प्रशिक्षु से कहा कि सभी को एक-एक गांव गोद लेकर पूर्ण साक्षर कर के धरती माता के ऋण से उऋण होना चाहिए। सभी के साक्षर होने से इनसे कोई गलत ढंग से हस्ताक्षर नहीं करा पाएगा।

महंत आदित्यनाथ की मौजूदगी में सोमवार को खोराबार विकास खंड के डांगीपार को साक्षर गांव घोषित किया गया।

खंड शिक्षाधिकारी जनार्दन यादव ने डांगीपार को साक्षर गांव घोषित करते हुए कहा कि अब इस गांव के लोग अंगूठा लगाने की जगह हस्ताक्षर करेंगे। भिखारी प्रजापति ने कहा कि 216 निरक्षरों के साक्षर होने से आज सांसद आदर्श गांव साक्षर घोषित किया गया।

समापन समारोह में विपिन कुमार सिंह, रामलक्ष्मण, जवाहर कसौधन, शिवा सिंह, विश्वाचल आजाद, खुशबू गुप्ता, संगीता सिंह, दिनेश कुमार यादव, अश्वनी कुमार, ऋषिकेश सहानी, प्रवीणकुमार सिंह, लाल बहादुर सिंह आदि मौजूद रहे।

7 गोरखपुर • मंगलवार • 6 दिसम्बर • 2016 सहारा

सांसद आदर्श ग्राम डांगीपार, खोराबार के प्राथमिक विद्यालय में सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के समापन पर...

साक्षर बना आदर्श गांव डांगीपार

प्रशिक्षु प्रमाणपत्र से सम्मानित

शिक्षा व साक्षरता विकास की रीढ़ : योगी

सम्मानित किए गए शहर के पर्यावरण रक्षक

पहल को सलाम

गोरखपुर | कार्यालय संवाददाता

शहर में हरियाली के लिए प्रयास करने वाले पर्यावरण रक्षकों का शनिवार की रात हिन्दुस्तान के शाम-ए-गजल में शॉल ओढ़ाकर, प्रशस्तिपत्र और विलुप्त प्रजाति के पनियाला, हरसिंगार के पौधे देकर सम्मानित किया गया। कुलपति प्रो. अशोक कुमार, 'हिन्दुस्तान' के यूनिट हेड हरि ओम पाण्डेय ने पर्यावरण रक्षकों को पुरस्कृत किया।

विश्व पृथ्वी दिवस इस बार ग्रीन सिटी थीम पर मनाया गया। इस मौके पर 'हिन्दुस्तान' ने हरियाली के लिए छोटी बड़ी कोशिशें करने वालों को सामने लाने की पहल की। ऐसे लोग जिन्होंने अपने घर, मोहल्ले को हरा भरा बनाने के लिए काम किए और दूसरों को भी प्रेरित किया।

विशेषज्ञ पैनल प्रकृति प्रेमी रवि द्विवेदी, गोविवि के ललित कला विभाग के अध्यक्ष डॉ. भारत भूषण, रसायन शास्त्र के प्रो. शिवशरण दास ने कई दिनों तक भ्रमण कर पर्यावरण रक्षकों के प्रयास को देखा-परखा। उसके बाद विजेताओं के नाम दीक्षा भवन में आयोजित गजल संध्या में घोषित किए गए।

हिन्दुस्तान • गोरखपुर • रविवार • 29 जून 2014

शाम-ए-गजल के आखिर में शहर की हरियाली बचाने का प्रयास करने वालों को सम्मानित किया गया। • हिन्दुस्तान

व्यक्तिगत श्रेणी

रंजू गुप्ता प्रथम, दीपिका सर्राफ व मुकुन्द गोयनका संयुक्त रूप से द्वितीय और डॉ. नमिता सिंह व डॉ. उमा सर्राफ संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे। इस श्रेणी में सांत्वना पुरस्कार पाने वालों में परमेश्वर प्रसाद, भारती सिंह, सुरेन्द्र मोहन भारती, रिकी जैन, मित्रसेन सिंह शामिल रहे।

संस्थागत श्रेणी

पद्म नर्सरी के ओमप्रकाश कर्मचन्दानी को प्रथम, महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज के डॉ. प्रदीप राव को द्वितीय और सरस्वती शिशु मंदिर सुभाषनगर के राजबिहारी विश्वकर्मा को तृतीय पुरस्कार मिला। इस श्रेणी में नवल्स एकेडमी समूह की किरन त्रिपाठी व दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज की प्राचार्य डॉ. गीता दत्त को सांत्वना पुरस्कार मिला।

घर में सभी पौधे लगाएं तो आएगी हरियाली

गोरखपुर। सुबह-शाम लगकर जिन्होंने अपने प्रयास से घर, छत, लॉन, गैलरी को हरा भरा बनाया। मेहमान या कोई अन्य जब भी उनके घर आए सबके मुंह से प्रशंसा निकली लेकिन अब तक किसी ने उन्हें इस प्रयास के लिए पुरस्कृत नहीं किया था। शनिवार को गजलों से भरी शाम में 'हिन्दुस्तान' ने सम्मानित किया तो उन्हें लगा कि प्रकृति को बचाने का उनका प्रयास सार्थक हो गए।

प्रकृति को बचाने के लिए सबको प्रयास करना होगा। गोरखपुर का हर व्यक्ति थोड़ा प्रयास करे तो बड़ा बदलाव हो सकता है। सभी एक-एक पौधे लगाएं तो पर्यावरण को संतुलित बनाया जा सकता है।

रंजू गुप्ता, व्यक्तिगत श्रेणी में प्रथम

'हिन्दुस्तान' ने जो सम्मान दिया उसे याद रखूंगी। पौधे लगाने का शौक सबके अंदर होना चाहिए। सब एक-एक पौधे लगाएं तो विलुप्त होती पौधों की विभिन्न लाभदायक प्रजातियों को बचाया जा सकता है।

उमा सर्राफ, व्यक्तिगत श्रेणी में तृतीय

गोरखपुर को सुन्दर व हरा बनाने के लिए सबको पेड़ न काटने का प्रण लेना होगा। गंदगी न फैलाएं। पेड़ों की सुरक्षा करें और अपने घर को हरा भरा बनाएं। इसका लाभ आने वाली पीढ़ी को भी मिलेगा।

दीपिका सर्राफ, व्यक्तिगत श्रेणी में द्वितीय

अगर जीवन बचाना है तो अपने जैसे ही पेड़-पौधों की भी रक्षा करनी होगी। रक्षा नहीं किया तो प्रकृति हमारी रक्षा करेगी इसमें संशय है। पूरे समाज को प्रकृति की रक्षा के लिए चेतना होगा।

डॉ. प्रदीप राव, संस्थागत श्रेणी में द्वितीय

... और सब सुनते

गोरखपुर | प्रमुख संवाददाता

कठपुतली से कर रहे जाग

- कठपुतलियों के माध्यम से विज्ञान लोकव्यवहार में बदलने की पहल
- हंसी-खेल में कठपुतली पात्र रहमा चाचा ने बता दिए इंसेफेलाइटिस से बचाव के सूत्र

इंडियन साइंस राइटर्स एसोसिएशन के महासचिव डॉ. वीपी सिंह के साथ मिलक लोग इंसेफेलाइटिस के प्रति ग्रामीणों को ज करने के लिए कठपुतली का मंचन कर र

रहमान चाचा मंझरिया गांव पहुंचे। गांव के मुहाने पर कूड़े का ढेर देख दुःखी हो गए। बीच गांव में पहुंच कर जोर से आवाज लगाई, 'सुनो-सुनो...मैं बूढ़ा आदमी बहुत दूर से चलकर आया हूं। कोई तो मेरी बात सुन ले। सब अपने-अपने काम में इतने मशरूफ हैं कि अपनी सुरक्षा की बात भी भूल गए...। जानते नहीं कि यह जो गंदगी फैली है इसी से जा रही है हमारे बच्चों की जान। जमीन की गंदगी पानी से जा मिलती है। वही पानी पीकर इंसेफेलाइटिस के शिकार बन जाते हैं बच्चे।'

रहमान चाचा की ये बातें सुनकर उनके पास लोग जमा हो जाते हैं। तब चाचा एक-एक का परिचय जानते और बात शुरू करते हैं। वह गांव वालों को हर पल का सदुपयोग करने, सफाई रखने, शोर-शराबे से बचने, सौर ऊर्जा, जलशक्ति सहित अन्य

हरियाली से

...पृथ्वी दिवस इस बार 'ग्रीन सिटी' थीम पर ...या गया। अपने शहर में भी 'ग्रीन गोरखपुर' का ...है। इसके तिहाई हिस्से में हरियाली होनी ..., जबकि रह गई है महज पांच प्रतिशत। इस ... दो रास्ते हैं या तो हम हरियाली घटने का ... या खुद पहल करें। अपने शहर में बहुत ... लोग हैं, जिनका जुनून है हरियाली। कुछ ...ने छोटे से लॉन या छत को हरा-भरा बना रखा ... कुछ पार्क और मोहल्ले में हरियाली लाने ...। 'हिन्दुस्तान' ऐसे लोगों के प्रयास ... चाहता है ताकि औरों को भी प्रेरणा मिले ... धीरे-धीरे अपना शहर भी हरा-भरा हो सके। ... अपनी गैलरी, लॉन या छत पर बगिया सजाई है ... टीम का हिस्सा है, जो किसी पार्क या ... की सड़कों को हरा-भरा बनाने में जुटी है तो ... या ई-मेल करें। संदेश में नाम, पूरा ... और मोबाइल नंबर जरूर लिखें। हमारी टीम ...। आपके प्रयास विशेषज्ञों के पैनल ... रखेगी। व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ... में श्रेष्ठ तीन-तीन प्रयासों को हिन्दुस्तान ... सामने लाएगा। आपके प्रयासों की ढेरों ... से भी शहरियों को रूबरू कराएगा।

डॉ. प

200 करने अका हम ल इस प्र बाद बाहर नजार भी दे भी कु सिर्फ भवन मैने क

रह गए 'रहमान चाचा' की समझदारी भरी बातें

इंसेफेलाइटिस के प्रति करेंगे जागरूक

प्रशिक्षण पूरा होने के बाद ये प्रतिभागी एक-एक गांव में जाएंगे और कठपुतलियों के जरिए इंसेफेलाइटिस जैसी बीमारियों की रोकथाम के प्रचार के साथ ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण फैलाने की कोशिश भी करेंगे। डॉ. वीपी सिंह बताते हैं विज्ञान के किताबी जटिल सूत्रों को आसान तरीके से आमजन और आम विद्यार्थियों तक पहुंचाने के लिए कठपुतलियों का प्रयोग किया जा रहा है। आयोजन में अहम भूमिका निभाने वाली एमपी पीजी की भौतिक विज्ञान शिक्षिका मनीता इसे प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर लागू करने की पक्षधर हो गई हैं तो कॉलेज प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव, शिक्षक अविनाश प्रताप सिंह, छात्रा आंचल श्रीवास्तव, धनन्जय और पास के गांव से आए संजय शर्मा का अनुभव है कि बात जब सहजता से कही जाती है तो विज्ञान के गूढ़ रहस्य भी रहस्य नहीं रह जाते, लोक व्यवहार बन जाते हैं।

प्राकृतिक जलस्रोतों की रक्षा सहित ढेर सारी जानकारी बातों-बातों में ही दे देते हैं। गांववालों में कोई उनका बेटा होता है, कोई बेटी तो कोई मौसी, ताई या भैया। बातों-बातों में रिश्ता जुड़ता चला जाता है। चाचा, विज्ञान की गूढ़ बातों को परिवार के बड़े बुजुर्ग की तरह बताते चले जाते हैं।

आप सोच रहे होंगे ये रहमान चाचा भला हैं कौन! और गांववाले इतनी शांति से उनकी बात क्यों सुन रहे हैं। तो भइया! रहमान चाचा कोई और नहीं बल्कि मिठाईलाल, हामिद अली जैसे विशेषज्ञों द्वारा तैयार कठपुतलियों में से एक बुजुर्ग पात्र हैं। उनके और गांववालों के रूप में कठपुतलियों के अन्य पात्रों के बीच जो कुछ संवाद हो रहा है वह कानपुर के डीएवी कॉलेज के डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह और छत्रपति शाहूजी महाराज पत्रकारिता संस्थान के प्रो. एके सिंह ने लिखे हैं।

ये सब इंडियन साइंस राइटर्स एसोसिएशन के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. वीपी सिंह के साथ आए हैं। मंझरिया के अलावा हसनगंज गांव में कठपुतलियों का यह शो हो चुका है। जंगल धूसड़ के महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज में पिछले आठ दिन से नियमित प्रशिक्षण चल रहा है। इसमें कॉलेज के 27 विद्यार्थी, सात शिक्षक और लिटिल फ्लावर पॉलीटेक्निक कॉलेज खोराबार, सरदार पटेल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नालॉजी, अखिल भारत स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानापार और एमपी कृषक इंटर कॉलेज जंगल धूसड़ के एक-एक छात्र भाग ले रहे हैं।

ढंकने लगा कॉलेज का भवन

दीप राव

हिन्दुस्तान • गोरखपुर • सोमवार • 28 अप्रैल 2014

दस से बारह साल में महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज का परिसर पेड़ों से ढंक जाएगा। • हिन्दुस्तान

5 में महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज ज्वाइन के कुछ ही दिनों बाद भुवनेश्वर में एक दमिक बैठक में शामिल होने का मौका मिला। गेग जिस गेस्ट हाउस में रुके थे वह पेड़ों से कार घिरा था कि परिसर के अंदर घुसने के ही उसकी बहुमंजिली इमारत दिखती थी। से सिर्फ पेड़ ही नजर आते थे। कुछ ऐसा ही मैंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में खा। मेरे मन में आया कि अपने कॉलेज को छ इस तरह हरा-भरा किया जाए कि बाहर से हरियाली दिखे, परिसर में प्रवेश के बाद ही दिखाई पड़े। मन में लिए इस संकल्प की चर्चा कॉलेज के शिक्षकों, स्टाफ और विद्यार्थियों के बीच की। सबने यह महसूस किया कि वाकई हरियाली से पठन-पाठन का माहौल आनन्दमय हो जाएगा। बस इसके बाद बागवानी समिति के गठन की प्रक्रिया चल पड़ी। कॉलेज करीब दस एकड़ है। भवन और खेल मैदान के अतिरिक्त करीब सात एकड़ जमीन बचती है। हमने पूरे खुले क्षेत्र को इस प्रकार से नियोजित किया कि 10-12 साल बाद पूरा परिसर पेड़ों से ढंका होगा और भवन उसके बीच दिखेगा। हमारी इस कोशिश में दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज के एनएसएस कार्यक्रम प्रभारी डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह का पूरा सहयोग मिला। सबके सम्मिलित प्रयासों से जुलाई 2006 में एक साथ एक हजार पेड़ लगाए गए। इसमें हर साल 50-60 पेड़ सूखे, लेकिन उन स्थानों को हम तत्काल नए पौधों से भरते गए। सागौन, शीशम, यूकेलिप्टस, आम, अमरूद, इमली, आंवला, जामुन, नीम, गुलमोहर, अमलतास, पीपल सहित अन्य कई प्रकार के करीब डेढ़ हजार पेड़ पल-बढ़ रहे हैं।

(डॉ. प्रदीप राव महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ के प्राचार्य हैं।)

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
गोरखपुर

संस्थापक-सप्ताह समारोह
०४-१० दिसम्बर, २०१८

स्वर्ण पदक प्रमाण-पत्र

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक-सप्ताह समारोह
के मुख्य महोत्सव में वर्ष २०१८ के
श्रेष्ठतम् संस्था का

गुरु श्री गोरक्षनाथ स्वर्ण पदक

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़, गोरखपुर, को

मुख्य अतिथि **माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी**

राष्ट्रपति, भारत

द्वारा प्रदान किया गया।

महन्त योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश
मंत्री/प्रबन्धक
महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

१०दिसम्बर, २०१८

कॉलेज के नवाचारों एवं शैक्षिक गुणवत्ता के आधार पर प्राप्त सम्मान

दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय सेवा योजना पुरस्कार

DEEN DAYAL UPADHYAYA NATIONAL SERVICE SCHEME AWARD

2010-2011

प्रमाण-पत्र

डॉ० प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर को राष्ट्रीय सेवा योजना में अनुकरणीय एवं सक्रिय नेतृत्व के लिए वर्ष 2010-11 का महाविद्यालय पुरस्कार प्रदान किया गया ।

राष्ट्रीय सेवा योजना परिवार डॉ० राव के मंगलमय भविष्य की कामना करता है।

01.10.11

डॉ० संजीत कुमार गुप्ता
कार्यक्रम समन्वयक

NOT ME BUT YOU

प्रो० (डॉ.) पी.सी. त्रिवेदी
कुलपति

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्
गोरखपुर
संस्थापक-सप्ताह समारोह
०४-१० दिसम्बर, २०१४

स्वर्ण पदक

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक-सप्ताह समारोह के मुख्य महोत्सव में वर्ष 2014 की श्रेष्ठतम संस्था का गुरू श्री गोरक्षनाथ स्वर्ण पदक महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर को मुख्य अतिथि माननीय श्री राम नाईक जी, राज्यपाल, उत्तरप्रदेश द्वारा प्रदान किया गया।

महन्त योगी आदित्य नाथ
मंत्री/प्रबन्धक
महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

१०दिसम्बर, २०१४

प्रशस्ति पत्र

पर्यावरण संरक्षण के लिए दैनिक हिन्दुस्तान द्वारा आयोजित **"हरियाली प्रतियोगिता"** में श्री/सुश्री......महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज......ने......द्वितीय......स्थान प्राप्त किया। इस योगदान के लिए दिनांक 28 जून 2014 को गोरखपुर विश्वविद्यालय के दीक्षा भवन में आयोजित समारोह में इन्हें सम्मानित किया गया।

श्री/सुश्री......महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज......के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

हरिओम पाण्डेय
यूनिट हेड

हिन्दुस्तान

दिनेश पाठक
स्थानीय सम्पादक

राष्ट्रीय सेवा योजना

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि महाराणा प्रताप पी०जी० कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

को सत्र 2014-15 का सर्वश्रेष्ठ महाविद्यालय का दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय सेवा योजना पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना परिवार महाविद्यालय परिवार के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

कार्यक्रम समन्वयक

कुलपति

गुरू श्री गोरक्षनाथ ब्लड बैंक एवं कॉम्पोनेन्ट सेन्टर

गुरू श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, गोरखनाथ, गोरखपुर

राष्ट्रीय रक्तदाता दिवस के अवसर पर प्रशस्ति पत्र

मान्यवर/मान्या....... महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

भारतीय तत्व दर्शन में निश्चित ही जीवन अमृत है। मानव ईश्वर की श्रेष्ठ कृति है। सृजनकर्ता स्वयं इस रूप को धारण करने में गौरव अनुभव करते हैं। आपक जीवन ज्योति सत्-चित-आनन्द का एक पुंज बने, आपका भावी जीवन सत्यम, शिवम्, सुन्दरम की अमूल्य यश की धरोहर की तरह मानव मात्र के कल्याण के लि समर्पित हो, यही जीवन की धन्यता है।

आपके द्वारा नियमित रक्त दान से की गयी मानव सेवा जो जीवन दाता के रूप में स्वीकार की गयी है वह न केवल अति सराहनीय है अपितु आपके इस कृत व कारण आपको मानव सेवा के उच्चतम श्रेणी में स्थापित करता है। आप एक महामानव की भूमिका निभाते हुए ऋषि एवं मुनियों की श्रेणी में बैठे संतों की अग्रणी पंकि के बहूमूल्य हस्ताक्षर हैं, लोक कल्याणकारी एवं रचनात्मक कार्य के प्रति सदैव समर्पित आपका व्यक्तित्व इतना विशाल है कि इसके समक्ष हमें सब कुछ तुच्छ ए बौना दिखाई देता है। आपके इस कृत्य के कारण मानव हित एवं राष्ट्र हित की प्रासंगिकता एवं महत्ता और महक उठी है। आपका यह भाव दर्शाता है कि आप दया व सागर हैं तथा लोक कल्याण के प्रति सदैव प्रतिबद्ध रहने वाले महर्षि हैं। आप मानव सेवा के जिस शिखर पर आच्छादित हैं वहां से प्रकाश की किरणें इसे देश में ही नह अपितु पूरे विश्व में फैल रही हैं। ऐसे विभिन्न गुणों से सम्पन्न आप जैसे महान व्यक्तित्व को अपने बीच पाकर हम सब अपार हर्ष, अतुलित आनन्द तथा गौरव कितना अभिभूत हैं इसे शब्दबद्ध नहीं किया जा सकता, औपचारिक तौर पर आपके विराट व्यक्तित्व के समक्ष नतमस्तक होते हुए मैं आपको बार-बार प्रणाम करता तथा औपचारिकता के निर्वहन हेतु मैं आभार के शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ।

आज आपके रक्तदान की भावना को सम्मानित करते हुए समाज एवं राष्ट्र आपका सदैव आभारी रहेगा। आप शतायु हों, आपका जीवन सुदीर्घ यश एवं कीर्ति क अमर कलश हो, यही हमारी शुभकामना है।

अध्यक्ष :- महंत योगी आदित्य नाथ
सदर सांसद, गोरखपुर

दिनांक 02.10.2015

प्रभारी :- डॉ0 अवधेश अग्रवाल

हमारे प्रयास ...

- प्रातः सरस्वती वन्दना, प्रार्थना, वन्देमातरम, राष्ट्रगान एवं श्रीमद्भगवद्गीता के पाँच श्लोक के साथ महाविद्यालय की दिनचर्या प्रारम्भ।
- प्रत्येक महापुरूष की जयन्ती अथवा पुण्यतिथि पर प्रार्थना सभा में उन पर संक्षिप्त परिचयात्मक उद्बोधन के साथ उन्हें श्रद्धांजलि।
- 16 जुलाई से स्नातक/स्नातकोत्तर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ।
- प्रति वर्ष पाठ्यक्रम योजना का प्रकाशन एवं तद्नुरूप 30 जनवरी तक पाठ्यक्रम पूर्ण करने की योजना का क्रियान्वयन।
- 16 अगस्त से प्रयोगशालाएं शुरू।
- छात्रसंघ का चुनाव सितम्बर प्रथम सप्ताह तक।
- प्रवेश समिति में छात्र-छात्राएँ सदस्य एवं संयोजक।
- छात्र, छात्राओं, प्राध्यापक, कर्मचारी आदि द्वारा प्रत्येक शनिवार को स्वैच्छिक श्रमदान।
- सप्ताह में एक दिन छात्र-छात्राओं द्वारा कक्षाध्यापक।
- छात्र-छात्राओं का मासिक मूल्यांकन।
- प्रतिदिन विद्यार्थियों को सारांश द्वारा कक्षाध्यापन।
- महाविद्यालय प्रशासन में छात्र-छात्रा सहभाग अर्थात् नियन्ता मण्डल, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि समितियों में छात्र सदस्य।
- विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों का गणवेश निर्धारित।
- छात्र-छात्राओं द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन, शिक्षक प्रतिपुष्टि प्रपत्र द्वारा।
- फरवरी माह में विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा।
- विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा में प्रथम तीन छात्र-छात्राओं को पुस्तकालय की विशेष सुविधा, प्रवेश समिति की सदस्यता, उनकी उत्तर पुस्तिकाएं पुस्तकालय में अवलोकनार्थ रखा जाना।
- परीक्षा से पूर्व समावर्तन संस्कार (दीक्षान्त) समारोह का आयोजन।
- शिक्षकों द्वारा छात्र-छात्राओं को गोद लेने की प्रक्रिया।
- सत्र में दो बार शिक्षक-अभिभावक एवं पुरातन छात्र परिषद् की बैठक।
- प्रतिवर्ष अगस्त माह में साप्ताहिक राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ स्मृति व्याख्यान माला।
- नवम्बर माह में शोध व्याख्यान प्रतियोगिता।
- प्रतिवर्ष 'विमर्श' (वार्षिक) एवं 'मानविकी' (अर्द्धवार्षिक) नामक शोध पत्रिका एवं समावर्तन पत्रिका का प्रकाशन।
- प्रत्येक सत्र में राष्ट्रीय संगोष्ठी/कार्यशाला का आयोजन।
- ग्रामीण महिलाओं के स्वालम्बन हेतु योगीराज बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन।
- महाविद्यालय के समस्त छात्र/छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं हेतु निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण।
- गुरू श्री गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र का संचालन।
- नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र का संचालन।
- हमारे महापुरुष, जीवन मूल्य प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम का संचालन।
- प्रत्येक विभाग द्वारा एक गाँव को गोद लेकर जनजागरण अभियान द्वारा संस्थागत सामाजिक दायित्व का निर्वहन।
- आदर्श ग्राम योजना के अन्तर्गत प्रयोग के तौर पर मंझरिया गाँव का सम्पूर्ण विकास।
- महन्त अवेद्यनाथ निःशुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र का संचालन।
- मासिक ई-पत्रिका ध्येय पथ का प्रकाशन।

पढ़ाई, स्वच्छता और सेवा को परिसर-संस्कृति का हिस्सा बनाता है प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम ही

महाविद्यालय अपने स्तर पर प्रत्येक छात्र-छात्राओं के लिए दो प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम (जीवन-मूल्य एवं हमारे महापुरूष) संचालित करता है। स्नातक स्तर पर तीन वर्ष के अध्ययन-काल में 6 माह के इस प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम को पढ़ना एवं उत्तीर्णांक प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ही है भारतीय संस्कृति के माध्यम से आदर्श जीवन-पद्धति युक्त योग्य नागरिक का निर्माण करना है।

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम : जीवन मूल्य

1. सृष्टि : उत्पत्ति एवं विकास - सृष्टि क्या है? पृथ्वी की उत्पत्ति, पृथ्वी पर जीवन, प्राणियों की उत्पत्ति, मानव की उत्पत्ति।
2. आदि मानव - आदि मानव का युग, आदि मानव का जीवन, अन्य प्राणियों और आदि मानव में अन्तर आदि मानव की प्रारम्भिक विकास यात्रा।
3. संस्कृति एवं सभ्यता का विकास - वनस्पतियों में मानव-निवास, नगरों का विकास, सामूहिक जीवन पद्धति की विकास यात्रा, जीवनोपयोगी वस्तुओं की खोज, निर्माण एवं विकास, संस्कार एवं सभ्य जीवन की अवधारणा का विकास, संस्कृति एवं सभ्यता का जन्म, क्रमिक विकास यात्रा, देव अवधारणा का जन्म एवं विकास, पद्धतियों का जन्म एवं विकास।
4. मानव जीवन - मानव जीवन का क्रमशः बदलता अभिप्राय, जीवन उद्देश्य, पुरुषार्थ चतुण्य (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)

जीवन मूल्य - मानव जीवनोद्देश की प्राप्ति के साधन रूप में जीवन-मूल्य का विकास, संस्कार, धर्म की भारतीय अवधारणा, जीवन-मूल्य के रूप में धर्म के दस लक्षण, पंच महायज्ञ, प्रकृति पूजा, आत्मा एवं परमात्मा (ब्रह्म, ईश्वर, मानवेतर सत्ता इत्यादि) की अवधारणा तथा जीवन-मूल्य के सृजन में योगदान, ज्ञान-कर्म-भक्ति जीवन-मूल्य के विविध घटक।

मैं और मेरा भारत - व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में अन्तर्सम्बन्ध, जीवन समाज एवं राष्ट्र के लिए भी, भारत की विविधता में एकात के साँचे में व्यक्ति, उपासना पद्धतियों और राष्ट्रीयता का अन्तर्सम्बन्ध, राष्ट्रीय एकता-अखण्डता सर्वोपरि, राष्ट्र व्यक्तिगत आस्था, उपासना एवं धर्म से बड़ा अर्थात् मैं और मेरा भारत।

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम : हमारे महापुरुष

महापुरुष - महापुरुष की अवधारणा, महापुरुष की निर्माण प्रक्रिया के कारक, महापुरुष की मान्यता, निर्माण के आधार, आत्मा-महात्मा-परमात्मा के अन्तर्सम्बन्ध महापुरुषों के निर्माण के संस्कृति-सभ्यता की भूमिका।

हमारे पूर्वज - भारतीय संस्कृति का अभ्युदय, भारत के आदि महापुरुष, श्रीराम एवं श्री कृष्ण, ऐतिहासिक युग के प्रमुख।

महापुरुष - महात्मा बुद्ध, महावीर जैन, गोरखनाथ, कौटिल्य, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य, बल्लभाचार्य, स्वामी रामानन्द, कबीर, तुलसी।

सन्दर्भ -

- हिन्दू संस्कृति अंक, कल्याण का विशेषांक
- सन्त अंक, कल्याण का विशेषांक
- हजारी प्रसाद द्विवेदी, नाथपंथ
- अक्षय कुमार बनर्जी, फिलॉसफी आफ गोरखपुर

यूपी-उत्तराखंड विशेष गोरखपुर/महाराणा प्रताप महाविद्यालय
24 इंडिया टुडे
17 अक्टूबर 2007

प्रयोगों के साथ पढ़ाई

उच्च शिक्षा की प्रयोगशाला बना यह कॉलेज उत्कृष्टता और आदर्श परिस्थितियों का संयोग है

अनुशासन का पाठ: कॉलेज में हो रही प्रार्थना

इस महाविद्यालय में सुबह 8 बजे से भक्ति संगीत की सुमधुर लहरियां धीरे-धीरे तैरने लगती हैं. ठीक 9.25 बजे छात्र, शिक्षक और कर्मचारी 'प्रार्थना' के लिए जुट जाते हैं. साल में दो बार अभिभावक बैठक होती है जिसमें वे अपने पाल्यों के व्यवहार और प्रगति की जानकारी लेते-देते हैं और हर शनिवार छात्र ही नहीं, शिक्षक और कर्मचारी भी वर्दी में आते हैं. यही नहीं, इस कॉलेज में हर सप्ताह एक दिन कक्षाएं छात्र लेते हैं. साल में दो बार वे शिक्षकों के प्रदर्शन का लिखित मूल्यांकन करते हैं. और कॉलेज में प्रवेश के लिए सबसे पहले जिस प्रवेश समिति के सामने पेश होना पड़ता है, उसमें केवल छात्र होते हैं. शिक्षक नेता रहे डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र कहते हैं, ''ऐसे दौर में, जब प्रदेश में उच्च शिक्षा परिसर अराजकता और अनुशासनहीनता के अखाड़े बन गए हों, सरकारों को छात्र संघों पर पाबंदी लगानी पड़े, किसी महाविद्यालय में ऐसी बातें सचमुच चौंकाती हैं.''

गोरखपुर के पूर्वी उत्तरी छोर पर जंगल धूसड़ इलाके में बना महाराणा प्रताप महाविद्यालय पिछले तीन साल से उच्च शिक्षा की प्रयोगशाला के रूप में उभरा है, जहां उत्कृष्टता और आदर्श परिस्थितियों का संयोग आज के दौर में अविश्वसनीय ही नहीं, अकल्पनीय भी लगता है. प्रसिद्ध गोरक्षपीठ की ओर से 1932 में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के डेढ़ दर्जन से अधिक शैक्षणिक प्रकल्पों में से एक, इस प्रकल्प के प्रबंधक, उग्र हिंदुत्व के पैरोकार के रूप में चर्चित भाजपा सांसद योगी आदित्यनाथ हैं. वे कहते हैं, ''इन प्रयोगों का उद्देश्य यह है कि यहां अध्ययन-अध्यापन करने वाले युवा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं कला की कालोचित शिक्षा ग्रहण करने के अलावा देश और समाज के प्रति सहज निष्ठा और अटूट श्रद्धा का भी पाठ पढ़ें.'' शायद तभी कॉलेज में ''15 अगस्त और 26 जनवरी को उपस्थिति अनिवार्य है.''

इस कॉलेज में अनुशासन पर काफी जोर है. विद्यार्थी कोई धूम्रपान नहीं करते, सो दीवारें अन्य परिसरों की तरह पीक से बदरंग नहीं हैं. अमूमन अराजकता के सबसे बड़े संभावना क्षेत्र बताए जाते छात्र संघ का चेहरा यहां बेहतर दिखता है. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव बताते हैं, ''हमारे यहां 36 वर्ग हैं जिनके टॉपर छात्र परिषद के सदस्य होते हैं. वे मतदान करके अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और महामंत्री चुनते हैं. हां, छात्र संघ के संविधान या संशोधनों के बारे में फैसला छात्रों की आम सभा में होता है.'' इन्हीं 36 में से 6 सदस्य प्राक्टोरियल बोर्ड में, 3 पुस्तकालय समिति में, 3 सांस्कृतिक समिति में, 6 क्रीडा समिति में तथा 3 स्वच्छता समिति में भी होते हैं. इस बार सरकार ने छात्र संघों पर पाबंदी लगा दी है, पर कॉलेज में इससे पहले ही परिषद का गठन हो चुका था लिहाजा वह कायम है.

''उद्देश्य यह है कि यहां के छात्र-शिक्षक शिक्षा के अलावा देश और समाज के प्रति निष्ठा और अटूट श्रद्धा का भी पाठ पढ़ें.''
योगी आदित्यनाथ, *भाजपा सांसद*

''हमारे यहां 36 वर्ग हैं जिनके टॉपर छात्र परिषद के सदस्य होते हैं और वे ही अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और महामंत्री चुनते हैं.''
डॉ. प्रदीप राव, *प्राचार्य, म.प्र. महाविद्यालय*

पर इन प्रयोगों में पढ़ाई का स्तर बना रहे इसके लिए भी खास इंतजाम दिखते हैं. सभी प्रयोगशालाएं मानकों पर खरी उतरती हैं. 'वातावरण सृजन' के लिए प्रयोगशालाओं से लेकर व्याख्यान कक्षों तक के नाम प्रख्यात वैज्ञानिकों और गणमान्य विभूतियों के नाम पर रखे गए हैं. गोरखपुर विवि से संबद्ध इस कॉलेज में मासिक टेस्ट के अलावा विश्वविद्यालयी परीक्षाओं से पूर्व टेस्ट भी होते हैं ताकि छात्रों को अपने प्रदर्शन का पूर्वानुमान हो सके. शिक्षकों का प्रदर्शन सुधरता रहे सो वर्ष में दो बार छात्र उनके प्रदर्शन का मूल्यांकन प्रपत्र भरते हैं जिसे संबंधित शिक्षक को भी देखने दिया जाता है. कॉलेज के शिक्षक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह कहते हैं, ''शुरू में अजीब लगा, पर इससे हमें अपने स्तरोन्नयन में मदद मिलती है.'' कॉलेज की लाइब्रेरी में टॉपरों की कापियां भी सार्वजनिक अवलोकन के लिए रखी जाती हैं.

दरअसल यह कॉलेज योगी की उस दूरगामी रणनीति का भी हिस्सा दिखता है जिसमें वे 'हिंदुत्व और विकास' के अपने साझा एजेंडे को ठोस आधार देना चाहते हैं. बकौल उनके एक आलोचक, ''उन्हें बखूबी पता है कि मध्य वर्ग उत्कृष्टता की चाह में बेचैन है. वे यही भुना रहे हैं.''

शायद यह सच भी है. पिछले कुछ समय में वे आक्रामक नेता, भावुक युवा और चतुर राजनीतिज्ञ के अलावा 'मैनेजमेंट गुरु' के रूप में भी उभरे हैं. इस कॉलेज के अलावा अपने प्रबंधन वाले गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय को भी उन्होंने ऐसे ही प्रयोगों के चलते तीसरे वर्ष में ही लाभ में पहुंचा दिया है. 'उत्तम प्रदेश' की आस में लगातार भटकते इस इलाके को शायद यही चाहिए. —कुमार हर्ष

शहर गली में चर्चा है
स्वच्छ कालेज अभियान की
आओ बच्चों तुम्हें बतायें
महत्ता कचरादान की
बिना प्रबन्धन बिमारी फैले
जो दुश्मन जान की
उचित प्रबन्धन खाद बनाता
करता मदद बागान की
शहर गली में चर्चा है
स्वच्छ कालेज अभियान की
लहर चल रही सभी ओर
अब मोदी-योगी अभियान की